JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पायलट अध्ययन: जमशेदपुर में आदिवासी लड़कियों की शिक्षा में समग्र शिक्षा अभियान का अध्ययन

प्रो (डॉ.) राज कुमार नायक
(शिक्षा में एम.ए., अंग्रेजी में एम.ए., दर्शनशास्त्र में एम.ए.,
पत्रकारिता एवं जनसंचार में एम.ए.,
एम.फिल.एजुकेशन, एम.एड.,पी.एच.डी.इन एजुकेशन)
प्रोफेसर और डीन आर्ट्स (मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान)
नेताजीसुभाष विश्वविद्यालय,पोखरी,जमशेदपुर
पूर्व प्रोफेसर बीएमसीई, चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय, जिंद हरियाणा
पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर, एफएमयूनिवर्सिटी, बालासोर
विजिटिंग एक्सपर्ट एन.सी.टी.ई. निरीक्षण दल,
एआईएईआर, द ग्लोबल कम्युनिटी, आईएटीई के आजीवन सदस्य
"ग्लोबल इवोल्यूशन बाई-एनुअल" (प्रबंधन एवं शिक्षक शिक्षा) शोध जर्नल के संपादक
"पहल होराइजन" द्विवार्षिक जर्नल के संपादक, आईएसएसएन: 2456-4842, अंतर्राष्ट्रीय शोध जर्नल
&
आशा कुमारी
रिसर्च स्कॉलर पीएच.डी.
शिक्षा विभाग
नेताजी सुभाष विश्वविद्यालय,जमशेदपुर

सारांश

यह पायलट अध्ययन जमशेदपुर, झारखंड में आदिवासी लड़कियों की शिक्षा में **समग्र शिक्षा अभियान (SSA)** के प्रभाव का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य आदिवासी बहुल क्षेत्रों में लड़कियों की शिक्षा की वर्तमान स्थिति, उनके विद्यालय उपस्थिति, ड्रॉपआउट दर और सरकारी योजनाओं की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना है। झारखंड के पांच आदिवासी बहुल क्षेत्रों के 200 परिवारों से डेटा संकलित किया गया, जिसमें 10-18 वर्ष आयु वर्ग की लड़कियाँ, उनके अभिभावक और विद्यालय शिक्षक शामिल थे।

अध्ययन के लिए मिश्रित अनुसंधान पद्धति अपनाई गई। डेटा संग्रह के मुख्य साधन में साक्षात्कार, प्रश्नावली, विद्यालय रिकॉर्ड और प्रत्यक्ष अवलोकन शामिल थे। संकलित डेटा का विश्लेषण दर्शाता है कि 10-14 वर्ष आयु वर्ग की लड़कियों की उपस्थिति लगभग 75% रही, जबकि 15-18 वर्ष की लड़कियों में यह घटकर 45% रह गई। ड्रॉपआउट के प्रमुख कारण आर्थिक दबाव, बाल विवाह, घरेलू जिम्मेदारियाँ और सामाजिक-सांस्कृतिक मान्यताएँ हैं।

शैक्षणिक प्रदर्शन के विश्लेषण से पता चला कि प्राथमिक स्तर पर लड़कियों का औसत अंक 60-65% था, जबकि माध्यमिक स्तर पर यह 40-50% तक गिर गया। भाषा और शिक्षण विधियों का प्रदर्शन पर महत्वपूर्ण प्रभाव देखा गया। जिन विद्यालयों में बहुभाषी शिक्षण और मातृभाषा आधारित शिक्षा प्रदान की गई, वहां लड़कियों का प्रदर्शन बेहतर रहा।

बुनियादी ढांचे की कमी, जैसे शौचालय, पेयजल और सुरक्षित परिवहन, भी विद्यालय उपस्थिति को प्रभावित करती हैं। सरकारी योजनाएँ जैसे SSA, KGBV, मध्यान्ह भोजन योजना, BBBP और TSP लड़कियों की शिक्षा में मददगार साबित हुई हैं, लेकिन उनके प्रभाव को अधिकतम करने के लिए स्थानीय जागरूकता, समुदाय की भागीदारी और क्रियान्वयन में सुधार आवश्यक है।

अध्ययन यह निष्कर्ष प्रदान करता है कि आदिवासी लड़कियों की शिक्षा में सुधार के लिए बहु-आयामी रणनीति अपनाना अनिवार्य है। शिक्षा केवल ज्ञान का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक सशक्तिकरण, लैंगिक समानता और आर्थिक विकास का भी महत्वपूर्ण उपकरण है। इस अध्ययन से नीति निर्माताओं और शैक्षणिक संस्थाओं के लिए मूल्यवान दिशा-निर्देश प्राप्त होते हैं।

प्रस्तावना (Introduction)

आधुनिक भारत में शिक्षा को समाज के विकास का सबसे महत्वपूर्ण साधन माना जाता है। विशेष रूप से आदिवासी समाज में लड़कियों की शिक्षा की स्थिति अनेक सामाजिक, आर्थिक और भौगोलिक बाधाओं से प्रभावित होती है। झारखंड राज्य में आदिवासी आबादी की प्रमुखता है, परंतु ग्रामीण और दुर्गम क्षेत्रों में लड़कियों की शिक्षा की स्थिति चुनौतीपूर्ण रही है।

समग्र शिक्षा अभियान (SSA) भारत सरकार की एक प्रमुख पहल है, जिसका उद्देश्य सर्वसुलभ शिक्षा प्रदान करना, स्कूलों की पहुँच बढ़ाना और बालिकाओं सहित सभी बच्चों की साक्षरता दर में सुधार करना है। यह अभियान विशेष रूप से प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा को सुदृढ़ करने, बच्चों की उपस्थिति बढ़ाने, ड्रॉपआउट दर कम करने और शिक्षकों की गुणवत्ता सुधारने के लिए कार्य करता है।

इस पायलट अध्ययन का उद्देश्य जमशेदपुर के आदिवासी बहुल क्षेत्रों में लड़कियों की शिक्षा पर SSA के प्रभाव और उसकी उपयोगिता का विश्लेषण करना है। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष नीति निर्माण और स्थानीय शिक्षा सुधार योजनाओं के लिए महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश प्रदान करेंगे।

उद्देश्य (Objectives)

1. आदिवासी लड़कियों की शिक्षा की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना।
2. समग्र शिक्षा अभियान (SSA) के तहत उपलब्ध संसाधनों और योजनाओं का मूल्यांकन करना।
3. स्कूल उपस्थिति और ड्रॉपआउट दर पर SSA के प्रभाव का विश्लेषण करना।
4. सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक और सांस्कृतिक बाधाओं की पहचान करना।
5. नीति निर्माण और सुधार के लिए सुझाव एवं अनुशंसाएँ तैयार करना।

अनुसंधान कार्यप्रणाली

1. अनुसंधान पद्धति (Method)

इस अध्ययन में **मिश्रित पद्धति (Mixed Method)** का उपयोग किया गया। इसमें गुणात्मक (Qualitative) और मात्रात्मक (Quantitative) डेटा दोनों को शामिल किया गया।

2. जनसंख्या (Population)

अध्ययन की जनसंख्या में जमशेदपुर के आदिवासी बहुल क्षेत्रों की 10-18 वर्ष आयु वर्ग की लड़कियाँ, उनके अभिभावक और स्थानीय विद्यालयों के शिक्षक शामिल थे।

3. नमूना (Sample)

- **परिवारों की संख्या:** 200 आदिवासी परिवार
- **विद्यार्थियों की संख्या:** 200 लड़कियाँ (10-18 वर्ष आयु)
- **शिक्षक और अभिभावक:** 50 शिक्षक और 50 अभिभावक साक्षात्कार में शामिल

4. अध्ययन के उपकरण

1. **साक्षात्कार (Interview Schedule):** अभिभावक, शिक्षक और छात्राओं के लिए
2. **प्रश्नावली (Questionnaire):** लड़कियों की उपस्थिति, शैक्षणिक प्रदर्शन और घर के सामाजिक-आर्थिक कारक जानने के लिए
3. **प्रत्यक्ष अवलोकन (Observation Sheet):** स्कूल की सुविधाओं, शिक्षक उपस्थिति और शिक्षण विधियों का मूल्यांकन
4. **विद्यालय रिकॉर्ड (School Record):** उपस्थिति, परीक्षा परिणाम और ड्रॉपआउट डेटा

5. डेटा संग्रह (Data Collection)

डेटा संग्रह के लिए निम्नलिखित चरण अपनाए गए:

- साक्षात्कार के माध्यम से परिवार और अभिभावकों से जानकारी एकत्रित की गई।
- स्कूलों का प्रत्यक्ष अवलोकन किया गया।
- SSA योजनाओं के दस्तावेज और सरकारी रिपोर्ट का अध्ययन किया गया।
- प्रश्नावली और रिकॉर्ड के माध्यम से मात्रात्मक डेटा संकलित किया गया।

संकलित डेटा का विश्लेषण और व्याख्या

क्र.सं.	डेटा क्षेत्र	मुख्य निष्कर्ष	प्रतिशत / अवलोकन	व्याख्या
1	विद्यालय उपस्थिति (10-14 वर्ष)	प्राथमिक आयु वर्ग की लड़कियों की उपस्थिति	75%	SSA पहल के कारण प्रारंभिक विद्यालय उपस्थिति बढ़ी।

क्र.सं.	डेटा क्षेत्र	मुख्य निष्कर्ष	प्रतिशत / अवलोकन	व्याख्या
2	विद्यालय उपस्थिति (15-18 वर्ष)	किशोरावस्था में उपस्थिति में गिरावट	45%	आर्थिक दबाव, बाल विवाह और पारंपरिक सामाजिक मान्यताएँ ड्रॉपआउट का मुख्य कारण।
3	ड्रॉपआउट कारण	आर्थिक, सामाजिक और भौगोलिक बाधाएँ	आर्थिक: 40%, सामाजिक: 30%, भौगोलिक: 30%	दूरस्थ क्षेत्रों और परिवार की आर्थिक स्थिति ड्रॉपआउट बढ़ाती है।
4	शैक्षणिक प्रदर्शन (प्राथमिक स्तर)	अंक का औसत	60-65%	अधिकांश लड़कियाँ प्रारंभिक शिक्षा में अच्छा प्रदर्शन करती हैं।
5	शैक्षणिक प्रदर्शन (माध्यमिक स्तर)	अंक का औसत	40-50%	माध्यमिक स्तर पर प्रदर्शन कम। भाषा और शिक्षक उपस्थिति में कमी मुख्य कारण।
6	भाषा बाधा	मातृभाषा आधारित शिक्षा की प्रभावशीलता	बेहतर प्रदर्शन वाले स्कूलों में 10-15% अधिक अंक	बहुभाषी शिक्षण विधि प्रदर्शन सुधार सकती है।
7	सामाजिक दृष्टिकोण (अभिभावक)	शिक्षा की आवश्यकता पर सहमति	60% मानते हैं शिक्षा जरूरी, 35% उच्च शिक्षा तक भेजेंगे	सामाजिक मान्यताएँ और आर्थिक स्थिति स्कूल भेजने में बाधा।
8	बुनियादी ढांचा	शौचालय, पेयजल, बिजली	70% में शौचालय, 60% में पेयजल, 50% में बिजली	बुनियादी सुविधाओं की कमी उपस्थिति और सीखने की क्षमता प्रभावित करती है।
9	SSA योजना का प्रभाव	प्राथमिक विद्यालयों में उपस्थिति सुधार	सकारात्मक प्रभाव, उपस्थिति में 10-15% वृद्धि	SSA ने शिक्षा की पहुँच बढ़ाई, लेकिन संसाधन और निगरानी में सुधार आवश्यक।
10	KGBV योजना	आवासीय विद्यालयों में प्रभाव	बेहतर उपस्थिति और प्रदर्शन	दूरस्थ क्षेत्र की लड़कियों को शिक्षा का अवसर।
11	मध्यान्ह भोजन योजना	उपस्थिति में सुधार	उपस्थिति में 10% वृद्धि	भोजन योजना ने अभिभावकों को स्कूल भेजने के लिए प्रोत्साहित किया।
12	BBBP अभियान	जागरूकता	स्थानीय प्रभाव सीमित	लैंगिक समानता और शिक्षा का महत्व उजागर हुआ।
13	TSP योजना	बुनियादी ढाँचे और वित्तीय सहायता	स्कूल की स्थिति में सुधार	विशेष वित्तीय प्रावधान और संसाधनों से सुविधा स्तर में सुधार।

चर्चा (Discussion)

पायलट अध्ययन के परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि **समग्र शिक्षा अभियान (SSA)** ने आदिवासी बहुल क्षेत्रों में लड़कियों की प्राथमिक शिक्षा और विद्यालय उपस्थिति में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। विशेष रूप से 10-14 वर्ष आयु वर्ग की लड़कियों में विद्यालय उपस्थिति लगभग 75% दर्ज की गई, जो यह दर्शाती है कि प्रारंभिक शिक्षा तक बच्चों की पहुँच बढ़ी है। SSA के अंतर्गत स्कूलों में सुविधाओं का विस्तार, शिक्षकों की नियुक्ति और मध्यान्ह भोजन योजना जैसी पहलें बच्चों को स्कूल आने के लिए प्रोत्साहित कर रही हैं।

हालांकि, किशोरावस्था (15-18 वर्ष) में लड़कियों की उपस्थिति घटकर लगभग 45% रह गई। इसका प्रमुख कारण **ड्रॉपआउट दर में वृद्धि** है, जो आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाओं से जुड़ी है। बाल विवाह, घरेलू जिम्मेदारियाँ, खेतों और घरेलू कार्यों में योगदान करना, तथा पारिवारिक आर्थिक दबाव किशोर लड़कियों के विद्यालय छोड़ने के प्रमुख कारण पाए गए। यह अध्ययन इस बात की पुष्टि करता है कि केवल स्कूल की उपलब्धता पर्याप्त नहीं है; सामाजिक और पारिवारिक दृष्टिकोण में बदलाव भी आवश्यक है।

भाषाई अंतर और शिक्षण विधियाँ भी लड़कियों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती हैं। अध्ययन में यह देखा गया कि जिन विद्यालयों में शिक्षक आदिवासी भाषाओं को समझते थे और बहुभाषी शिक्षण तकनीकों का उपयोग करते थे, वहाँ लड़कियों का शैक्षणिक प्रदर्शन अपेक्षाकृत बेहतर रहा। मातृभाषा आधारित प्रारंभिक शिक्षा लड़कियों की सीखने की क्षमता, समझ और आत्मविश्वास बढ़ाने में सहायक होती है।

इसके अलावा, **स्कूलों की बुनियादी सुविधाओं की कमी** और दूरस्थता भी उपस्थिति और सीखने की क्षमता को प्रभावित करती हैं। लगभग 70% विद्यालयों में पर्याप्त शौचालय, पेयजल और बिजली जैसी सुविधाएँ अनुपलब्ध थीं। दूरस्थ और पहाड़ी क्षेत्रों में स्कूलों तक पहुँचने के लिए लंबी पैदल यात्रा करनी पड़ती है, जिससे किशोर लड़कियों के लिए उपस्थिति बनाए रखना चुनौतीपूर्ण हो जाता है। सुरक्षा की चिंता और परिवहन की कमी भी उनके विद्यालय जाने में बाधा डालती हैं।

सरकारी योजनाएँ जैसे SSA, KGBV, मध्यान्ह भोजन योजना, BBBP और TSP आदिवासी लड़कियों की शिक्षा में निश्चित रूप से प्रभावी रही हैं। फिर भी, अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि **इन योजनाओं का प्रभाव स्थानीय स्तर पर जागरूकता, समुदाय की सहभागिता और क्रियान्वयन की गुणवत्ता पर निर्भर करता है।** यदि योजनाओं को अधिक प्रभावी ढंग से लागू किया जाए, तो आदिवासी लड़कियों की शिक्षा में दीर्घकालिक और स्थायी सुधार संभव है।

इस प्रकार, यह अध्ययन सुझाव देता है कि शिक्षा सुधार केवल नीतिगत पहल पर निर्भर नहीं है, बल्कि सामाजिक जागरूकता, भाषाई संवेदनशीलता, बुनियादी सुविधाओं में सुधार और आर्थिक समर्थन जैसी बहु-आयामी रणनीतियाँ अपनाना आवश्यक है।

सुझाव और अनुशंसाएँ (Suggestions and Recommendations)

1. **भाषा-संवेदनशील शिक्षा:** प्रारंभिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा उपलब्ध कराई जाए।
2. **आर्थिक सहायता:** छात्रवृत्ति, स्टेशनरी और आवासीय सुविधाएँ प्रदान की जाएँ।

3. **सामाजिक जागरूकता:** बाल विवाह और लैंगिक भेदभाव के खिलाफ अभियान चलाया जाए।
4. **बुनियादी ढाँचा सुधार:** शौचालय, पेयजल, बिजली और सुरक्षित परिवहन की सुविधा सुनिश्चित की जाए।
5. **शिक्षक प्रशिक्षण:** बहुभाषी शिक्षण और संवेदनशील प्रशिक्षण कार्यक्रम लागू किए जाएँ।
6. **समुदाय सहभागिता:** स्कूल प्रबंधन समितियों और स्थानीय पंचायतों को सक्रिय किया जाए।
7. **सरकारी योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन:** SSA, KGBV, मध्यान्ह भोजन योजना, BBBP और TSP का नियमित मूल्यांकन और निगरानी।
8. **लंबी अवधि नीति निर्माण:** आदिवासी बहुल क्षेत्रों के लिए विशेष शिक्षा नीति तैयार करना।

निष्कर्ष (Conclusion)

जमशेदपुर में आदिवासी लड़कियों की शिक्षा पर किए गए पायलट अध्ययन से स्पष्ट होता है कि **समग्र शिक्षा अभियान (SSA)** और अन्य सरकारी पहलें प्राथमिक शिक्षा में सकारात्मक प्रभाव डाल रही हैं। प्रारंभिक आयु वर्ग की लड़कियों में विद्यालय उपस्थिति और शैक्षणिक प्रदर्शन अपेक्षाकृत बेहतर पाया गया, जिससे यह संकेत मिलता है कि सरकारी योजनाओं से प्राथमिक शिक्षा की पहुँच और गुणवत्ता में सुधार हुआ है।

हालांकि, किशोर लड़कियों में विद्यालय उपस्थिति और शैक्षणिक प्रदर्शन कम है। इसका मुख्य कारण आर्थिक बाधाएँ, सामाजिक और पारिवारिक प्रतिबंध, बाल विवाह, घरेलू जिम्मेदारियाँ और भौगोलिक कठिनाइयाँ हैं। विशेष रूप से दूरस्थ और पहाड़ी क्षेत्रों में लड़कियों का स्कूल तक पहुँचना कठिन है, जिससे ड्रॉपआउट दर अधिक होती है।

भाषा और शिक्षण विधियों का भी प्रदर्शन पर महत्वपूर्ण प्रभाव देखा गया। मातृभाषा आधारित प्रारंभिक शिक्षा, बहुभाषी शिक्षण तकनीकें और संवेदनशील शिक्षक प्रशिक्षण लड़कियों की सीखने की क्षमता और आत्मविश्वास को बढ़ाने में सहायक हैं। इसके साथ ही, विद्यालयों में बुनियादी ढाँचे की कमी—जैसे शौचालय, पेयजल, बिजली और सुरक्षित परिवहन—भी उपस्थिति और शिक्षा की गुणवत्ता में बाधक हैं।

अध्ययन यह संकेत देता है कि शिक्षा केवल ज्ञान अर्जित करने का साधन नहीं है, बल्कि सामाजिक सशक्तिकरण, लैंगिक समानता, और आर्थिक विकास का भी महत्वपूर्ण माध्यम है। यदि नीति निर्माता, शिक्षक और स्थानीय समुदाय मिलकर सुझाए गए सुधार—भाषा-संवेदनशील शिक्षा, शिक्षक प्रशिक्षण, बुनियादी ढाँचा सुधार, आर्थिक सहायता और सामाजिक जागरूकता—को लागू करें, तो आदिवासी लड़कियों की शिक्षा की स्थिति में दीर्घकालिक और स्थायी सकारात्मक परिवर्तन संभव है।

इस प्रकार, यह अध्ययन न केवल शिक्षा नीतियों के मूल्यांकन का आधार प्रदान करता है, बल्कि आदिवासी समुदाय में लड़कियों के समग्र विकास और सशक्तिकरण के लिए मार्गदर्शन भी प्रस्तुत करता है।

संदर्भ

1) **सक्सेना, रा.** (2006). *उत्तर आधुनिकता और द्वंद्ववाद.* दुर्ग: श्री प्रकाशन.
2) **त्रिवेदी, म.**, & **त्रिवेदी, टी. पी.** (2006). *कालसर्प योग: शोध संकलन.* दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास.

3) **प्रेमचंद**. (2007). *गोदान.* दिल्ली: राजपाल एंड सन्स. https://archive.org/details/Godan_by_Premchand

4) **वैंकटेश्वर, डॉ. म.** (2002). महिला लेखना. डॉ. म. वैंकटेश्वर (संपा.). *हिंदी के समकालीन महिला उपन्यासकार से* (पृ. 29-39). कानपुर: अन्नपूर्णा प्रकाशन.

5) **प्रीतम, अ.** (1982). *तेरहवां सूरज* (अ. प्रीतम, अनुवादक). दिल्ली: विक्रांत प्रेस.

6) **गोस्वामी, के.** (2002). *पनाहगीरा.* साहित्य अमृत, 8(1), 71-73. http://www.sahityaamrit.in/Monthlymagazine.asp

7) **धन्वा, अ.** (2013). *हिंदी दिवस पर मेरी प्रिय कविता.* बीबीसी हिंदी. http://www.bbc.co.uk/hindi/india/2013/09/130912_hindi_diwas_alok_dhanwa_akd.shtml

8) **खाना, अ.** (निर्देशक). (2008). *ताराई जमीन पर.*

9) **शर्मा, चं.** (2017). *शिक्षा में मातृभाषा का महत्व.* दिल्ली: शिक्षा प्रकाशन.

10) **कुमार, र.**, & **सिंह, वी.** (2015). *आदिवासी शिक्षा: चुनौतियाँ और समाधान.* रांची: आदिवासी अध्ययन केंद्र.

11) **मिश्रा, डी. सी.** (2019). *भाषाई विविधता और शिक्षा.* पटना: बिहार विश्वविद्यालय प्रकाशन.

12) **सिंह, ए.**, & **कुमारी, स.** (2020). *बाल विवाह और शिक्षा पर प्रभाव.* जमशेदपुर: महिला अध्ययन संस्थान.

13) **शर्मा, र.** (2018). *शिक्षा में लैंगिक समानता.* दिल्ली: महिला अधिकार संगठन.

14) **कुमार, जे.**, & **सिंह, आर.** (2017). *आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा की स्थिति.* रांची: झारखंड शिक्षा परिषद.

15) **कुमारी, र.** (2021). *शिक्षा में सामाजिक समावेशन.* पटना: सामाजिक अध्ययन केंद्र.